

‘जनपद अलीगढ़ के माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षणिक सक्रियता और शिक्षण रणनीतियों का एक अध्ययन

Kamna Bhardwaj, Dr. Yatendra Pal

¹Research Scholar

²Associate Professor (Supervisor)

Institute of Education and Research

Manglayatan University, Beswan, Aligarh

सारांश 1, शिक्षकों की सक्रियता को बढ़ावा देने के लिए सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ, इंटरएक्टिव शिक्षण और व्यक्तिगत सुझाव उपयोगी हो सकते हैं। इसमें डिजिटल उपकरणों और प्रौद्योगिकी का सही उपयोग भी शामिल हो सकता है। विद्यालय, शिक्षकों और सहपाठियों के प्रति विद्यार्थियों की भावनात्मक जुड़ाव की भावना आती है। भावनात्मक सक्रियता, या भावनात्मक प्रतिक्रिया, एक मानसिक और शारीरिक प्रतिक्रिया है जो किसी व्यक्ति के आंतरिक या बाहरी वातावरण से उत्पन्न होने वाली भावनाओं को प्रतिबिंबित करती है। यह शब्द अधिकतर तंत्रिका विज्ञान, मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक-भावनात्मक अध्ययन में प्रयोग होता है। भावनात्मक सक्रियता व्यक्ति की किसी विशेष घटना या स्थिति पर तीव्र और त्वरित प्रतिक्रिया को बताती है। भावनात्मक सक्रियता मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र द्वारा व्यक्त भावनाओं की तीव्रता और उन पर प्रतिक्रिया की प्रक्रिया को बताती है। यह परिभाषा बताती है कि भावनात्मक सक्रियता एक व्यक्ति की मानसिक स्थिति और व्यक्तित्व के आधार पर अलग हो सकती है। उदाहरण के लिए, जीवन में आने वाले मुश्किल समय के प्रति कुछ लोग अधिक संवेदनशील होते हैं, जबकि कुछ लोग इन परिस्थितियों को शांतिपूर्वक स्वीकार करते हैं। इस दृष्टिकोण से पता चलता है कि किसी भावना का शरीर और मस्तिष्क पर क्या असर होता है। ये भावनाएं, जैसे कि भय, तनाव, खुशी, गुस्सा या डर, व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं।

मुख्य शब्द, भावनात्मक सक्रियता, सामाजिक-भावनात्मक, भावनात्मक प्रतिक्रिया, क्रोध आदि।

परिचय, सकारात्मक भावनात्मक सक्रियता: इसमें प्रेम, खुशी, संतोष और उत्साह जैसे भावनाएं शामिल हैं। ये भावनाएं एक व्यक्ति को शारीरिक और मानसिक रूप से सक्रिय करती हैं और उनके जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डालती हैं, इसलिए यह उनके मानसिक स्वास्थ्य के लिए अच्छा है। नकारात्मक भावनात्मक सक्रियता इसमें भय, क्रोध, चिंता और अवसाद शामिल हैं। यदि ये भावनाएं नियंत्रित नहीं की जाती हैं, तो वे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को खराब कर सकते हैं।

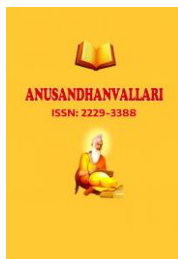
भावनात्मक सक्रियता के कारण, भावनात्मक सक्रियता के कई कारण हो सकते हैं, जिनमें जैविक, मानसिक, सामाजिक, और पर्यावरणीय तत्व शामिल हैं। जैविक कारण: अमिग्डाला और फ्रीडल कॉर्टेक्स, मस्तिष्क के कुछ विशिष्ट भागों, भावनाओं के अनुभव और प्रतिक्रियाओं को प्रभावित करते हैं। व्यक्ति के भावनात्मक भाग अधिक सक्रिय हो सकते हैं जब ये भाग बहुत सक्रिय होते हैं। मानसिक कारण भावनात्मक सक्रियता भी व्यक्ति की मानसिक स्थिति से प्रभावित हो सकती है, जैसे तनाव, चिंता और अवसाद। मानसिक विकारों वाले लोग अधिक भावनात्मक होते हैं। सामाजिक और पर्यावरणीय कारण: सामाजिक संबंध, पारिवारिक परिस्थितियाँ और कामकाजी दबाव भी भावनात्मक उत्तेजना को बढ़ा सकते हैं। जैसे कि पारिवारिक समस्याएं या एक तनावपूर्ण काम व्यक्ति की भावनाओं पर गहरा असर डाल सकते हैं।

भावनात्मक सक्रियता और मानसिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य भावनात्मक सक्रियता से प्रभावित होता है। एक व्यक्ति की मानसिक स्थिति भावनात्मक संतुलन से प्रभावित हो सकती है। अत्यधिक भावनात्मक सक्रियता चिंता, अवसाद, या मानसिक तनाव का कारण बन सकती है, लेकिन नियंत्रित और संयमित भावनात्मक सक्रियता मन को स्थिर रखती है और सुख-शांति लाती है।

1. अत्यधिक भावनात्मक सक्रियता का प्रभाव: जब भावनात्मक प्रतिक्रियाएं बहुत तीव्र और आवेगी होती हैं, तो यह मानसिक स्वास्थ्य को खराब कर सकता है। यह अवसाद, बॉर्डरलाइन पर्सनैलिटी डिसऑर्डर, चिंता विकार और अन्य मानसिक विकारों को बढ़ा सकता है।

2. नियंत्रित भावनात्मक सक्रियता का प्रभाव: यदि कोई व्यक्ति अपनी भावनाओं को नियंत्रित और नियंत्रित करने में सक्षम है, तो वह अधिक आत्मविश्वास और मानसिक स्थिरता पा सकता है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता, जो भावनाओं को पहचानने, समझने और नियंत्रित करने की क्षमता है, मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद कर सकती है।

भावनात्मक सक्रियता और शारीरिक स्वास्थ्य, भावनात्मक सक्रियता का शारीरिक स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है। तीव्र और बहुत नकारात्मक भावनाएं, जैसे गुस्सा या चिंता, शारीरिक नुकसान कर सकती हैं। ये भावनाएं शरीर में तनाव हार्मोन (जैसे कोर्टिसोल) को बढ़ा सकती हैं, जो लंबे समय तक उच्च रक्तचाप, हृदय रोग और अन्य शारीरिक समस्याओं का कारण बन सकता है। वहीं, सकारात्मक भावनाओं का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा होता है। यह शरीर में खुशी के हार्मोन, एंडोर्फिन, का स्तर बढ़ा सकता है, जो शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद करते हैं।



भावनात्मक सक्रियता और सामाजिक व्यवहार, भावनात्मक सक्रियता भी सामाजिक और व्यक्तिगत संबंधों में महत्वपूर्ण है। अत्यधिक भावनात्मक सक्रियता से व्यक्ति का व्यवहार तीव्र और आवेशपूर्ण हो सकता है, जो रिश्तों में समस्याएं पैदा कर सकता है। वहीं, कोई अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखने से अपने रिश्तों में अधिक सहानुभूति और सहानुभूति दिखा सकता है।

भावनात्मक सक्रियता को नियंत्रित करने के कुछ उपाय इस प्रकार हो सकते हैं:

- मेडिटेशन और ध्यान: ध्यान और मेडिटेशन से मानसिक शांति प्राप्त की जा सकती है और भावनाओं को नियंत्रित किया जा सकता है।
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता: व्यक्ति को अपनी भावनाओं को पहचानने और समझने की क्षमता विकसित करनी चाहिए, ताकि वह उन्हें बेहतर तरीके से नियंत्रित कर सके।
- शारीरिक व्यायाम: शारीरिक गतिविधि से मानसिक शांति मिलती है और यह भावनाओं को संतुलित रखने में सहायक होती है।
- सामाजिक समर्थन: परिवार और मित्रों के साथ समय बिताना और उनके साथ अपनी भावनाओं को साझा करना मानसिक स्थिरता को बढ़ावा देता है।
- व्यवहारिक सक्रियता (Behavioral Engagement): इसमें उपस्थिति, कक्षा में भागीदारी, और विद्यालयी नियमों के पालन का समावेश होता है।

व्यवहारिक सक्रियता, एक व्यक्ति के आंतरिक और बाहरी उत्तेजनाओं पर प्रतिक्रिया करने की प्रवृत्ति और तीव्रता, व्यावहारिक सक्रियता के रूप में व्यक्त की जा सकती है। यह शब्द शारीरिक और मानसिक प्रतिक्रियाओं को समेटता है, जो कोई व्यक्ति किसी विशिष्ट परिस्थिति या घटना के प्रति व्यक्त करता है। व्यावहारिक सक्रियता में किसी व्यक्ति की उत्तेजना, प्रतिक्रिया की तीव्रता और गति शामिल हैं। यह अवधारणा न केवल मानसिक स्वास्थ्य अध्ययन में महत्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक, शारीरिक और मनोवैज्ञानिक विज्ञान के कई क्षेत्रों में भी लागू होती है।

व्यवहारिक सक्रियता का परिभाषा, विशेष परिस्थितियों या घटनाओं पर किसी व्यक्ति की प्रतिक्रियाओं की तीव्रता और प्रकार को व्यावहारिक सक्रियता कहते हैं। इसे मुख्य रूप से तीन श्रेणियों में रखा जा सकता है:

- प्रतिसाद की तीव्रता किसी व्यक्ति का उत्तेजनाओं के प्रति तीव्र या मंद प्रतिक्रिया देना।
- प्रतिक्रिया का समय प्रतिक्रिया कितनी जल्दी होती है।
- प्रतिक्रिया की प्रकृति प्रतिक्रिया सकारात्मक या नकारात्मक हो सकती है।

व्यवहारिक सक्रियता के कारण, जैविक, मानसिक, पर्यावरणीय और सामाजिक सक्रियता के कई कारण हैं:

1. जैविक कारण:

- मस्तिष्क के कुछ हिस्से जैसे अमिग्डाला, फ्रीड्रंटल कॉर्टेक्स और हाइपोथैलेमस, व्यक्ति की व्यवहारिक सक्रियता में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। ये हिस्से उत्तेजनाओं के प्रति त्वरित प्रतिक्रियाएं उत्पन्न करते हैं।
- आनुवंशिकी और न्यूरोलॉजिकल असंतुलन भी एक व्यक्ति की व्यवहारिक सक्रियता को प्रभावित कर सकते हैं। मस्तिष्क में न्यूरोट्रांसमीटर्स की असंतुलनता व्यक्ति के व्यवहार पर गहरा असर डाल सकती है।

2. मानसिक और भावनात्मक कारण:

- व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य भी उसकी व्यवहारिक सक्रियता को प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए, उच्च स्तर का तनाव या चिंता व्यक्ति को अधिक प्रतिक्रियाशील बना सकता है।
- किसी व्यक्ति की भावनाओं का स्तर, जैसे घबराहट या उत्तेजना, उसके व्यवहार की तीव्रता को प्रभावित कर सकता है।

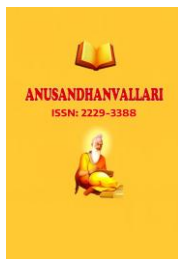
3. सामाजिक और पर्यावरणीय कारण:

- परिवार, दोस्तों, और सामाजिक संबंध व्यक्ति की प्रतिक्रियाओं को आकार देते हैं। सकारात्मक समर्थन और स्वस्थ सामाजिक संबंध व्यक्ति को कम प्रतिक्रियाशील और अधिक संयमित बना सकते हैं।
- कार्यस्थल का दबाव, पारिवारिक समस्याएं, या समाजिक अपेक्षाएं भी व्यक्ति के व्यवहार पर प्रभाव डाल सकती हैं।

4. विकासात्मक कारण:

- जीवन के विभिन्न चरणों के साथ व्यवहारिक सक्रियता भी बदल सकती है। बच्चे आमतौर पर अधिक प्रतिक्रियाशील होते हैं, जबकि वृद्ध व्यक्ति अक्सर अधिक संयमित और स्थिर होते हैं।

व्यवहारिक सक्रियता का प्रभाव, मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य दोनों व्यावहारिक सक्रियता से प्रभावित होते हैं। अत्यधिक प्रतिक्रियाशील व्यक्ति शारीरिक समस्याओं और मानसिक अस्थिरता का सामना कर सकते हैं, लेकिन संयमित और नियंत्रित व्यवहार शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक शांति को बेहतर बना सकता है।



1. मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव:

मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव अत्यधिक व्यवहारिक सक्रियता से हो सकता है। यह मानसिक विकारों जैसे चिंता, अवसाद और तनाव का कारण बन सकता है जब व्यक्ति हर छोटी-छोटी उत्तेजना पर तीव्र और तीव्र प्रतिक्रिया देता है। योग्य व्यवहार, इसके विपरीत, आत्म-नियंत्रण को बढ़ावा दे सकता है और मानसिक स्वास्थ्य को सुधार सकता है।

2. शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रभाव:

शारीरिक स्वास्थ्य भी व्यावहारिक सक्रियता से प्रभावित होता है। अत्यधिक प्रतिक्रियाशीलता शरीर में तनाव हार्मोन (जैसे कोर्टिसोल) को बढ़ा सकती है, जो उच्च रक्तचाप, हृदय रोग और पेट की समस्याओं का कारण बन सकती है। वहीं, शांतिपूर्ण और नियंत्रित व्यवहार शारीरिक स्वास्थ्य को सुधार सकता है।

3. सामाजिक संबंधों पर प्रभाव:

सामाजिक संबंध भी व्यावहारिक सक्रियता से प्रभावित होते हैं। अत्यधिक प्रतिक्रियाशील व्यक्ति के रिश्ते अक्सर तनावपूर्ण हो सकते हैं क्योंकि उनकी प्रतिक्रियाएं दूसरे को परेशान कर सकती हैं। यदि कोई अपने व्यवहार पर नियंत्रण रखता है, तो वह अधिक सहानुभूति और समझदारी व्यक्त कर सकता है, जो संबंधों को बेहतर बना सकता है।

व्यवहारिक सक्रियता और सकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य, यदि व्यक्ति अपनी प्रतिक्रियाओं को सही तरीके से नियंत्रित करता है, तो व्यावहारिक सक्रियता उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर बना सकती है।

- आत्म-नियंत्रण व्यक्ति को अपनी प्रतिक्रियाओं को पहचानने और उनका प्रबंधन करने की क्षमता विकसित करनी चाहिए। आत्म-नियंत्रण से मानसिक शांति और संतुलन बनाए रखने में मदद मिलती है।
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता किसी व्यक्ति का अपनी भावनाओं को पहचानने, समझने और नियंत्रित करने की क्षमता उसकी व्यवहारिक सक्रियता को नियंत्रित कर सकती है। यह मानसिक शांति को बढ़ावा देती है और सामाजिक संबंधों को मजबूत करती है।

व्यवहारिक सक्रियता को नियंत्रित करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण उपाय हैं:

- मेडिटेशन और ध्यान: ध्यान से व्यक्ति को मानसिक शांति प्राप्त होती है, और यह उसकी प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित करने में मदद करता है।
- शारीरिक व्यायाम: व्यायाम से मानसिक तनाव कम होता है और यह शरीर को शांति प्रदान करता है, जो व्यवहारिक सक्रियता को नियंत्रित करता है।
- सामाजिक समर्थन: परिवार और दोस्तों से सहयोग प्राप्त करने से व्यक्ति अपने मानसिक दबाव को कम कर सकता है और अपने व्यवहार को नियंत्रित कर सकता है।
- मनोचिकित्सा: यदि किसी व्यक्ति को अत्यधिक प्रतिक्रियाशीलता की समस्या है, तो मानसिक चिकित्सा या परामर्श से उसे अपने व्यवहार को नियंत्रित करने में मदद मिल सकती है।

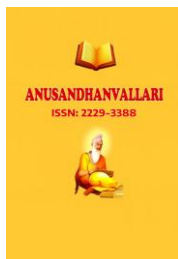
Fredricks, Blumenfeld, और Parè (2004) के अनुसार, विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता और भविष्य की सफलता का एक महत्वपूर्ण संकेत सक्रियता है। सरकारी विद्यालयों में संसाधन और शिक्षकों की कमी के कारण विद्यार्थियों की सक्रियता कम हो सकती है, जबकि गैर-सरकारी विद्यालयों में अतिरिक्त पाठ्यक्रम गतिविधियां और उच्च शिक्षण मानक विद्यार्थियों की सक्रियता को बढ़ा सकते हैं।

सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों का परिप्रेक्ष्य, भारत में सरकारी और गैर-सरकारी (निजी) विद्यालय हैं। गैर-सरकारी विद्यालयों में अधिक सुविधाएं, व्यक्तिगत ध्यान और नवीनतम शैक्षणिक तकनीक हैं, लेकिन सरकारी विद्यालयों का मुख्य उद्देश्य सभी को समान और निःशुल्क शिक्षा देना है।

भारत में सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों का परिप्रेक्ष्य, भारत में शिक्षा की संरचना बहुत विविध है, जिसमें सरकारी और गैर-सरकारी दो प्रमुख श्रेणियाँ हैं। ये दोनों विद्यालय भारत की शिक्षा व्यवस्था और समाज में महत्वपूर्ण हैं। सरकारी विद्यालयों का वित्तपोषण और नियंत्रण निजी संस्थाओं से होता है, जबकि गैर-सरकारी विद्यालय निजी संस्थाओं द्वारा संचालित होते हैं। लेकिन दोनों ही प्रकार के विद्यालयों का उद्देश्य बच्चों को शिक्षित करना है, उनकी संरचना, शिक्षण प्रणाली, पाठ्यक्रम और सुविधाएँ अक्सर अलग होती हैं। इस लेख में हम भारत में सरकारी और गैर-सरकारी विद्यालयों के बीच भेदों को समझेंगे और उनकी संरचनाओं, लाभों और चुनौतियों पर चर्चा करेंगे।

सरकारी विद्यालय, भारत में राज्य और केंद्रीय सरकारें सरकारी विद्यालयों को स्थापित और वित्त पोषित करती हैं। इन विद्यालयों का लक्ष्य शिक्षा का अधिकार सुनिश्चित करना है, विशेष रूप से कमजोर आर्थिक स्थिति वाले बच्चों के लिए। सरकारी स्कूलों को शैक्षिक विकास योजनाओं के तहत सरकार द्वारा वित्त पोषित किया जाता है, जिसका धन टैक्स से मिलता है।

सरकारी और गैर-सरकारी विद्यालयों के बीच तुलना, शिक्षण गुणवत्ता सरकारी विद्यालयों में शिक्षण की गुणवत्ता में उतार-चढ़ाव होता है, जबकि गैर-सरकारी विद्यालयों में आमतौर पर बेहतर शिक्षण विधियाँ और अधिक प्रशिक्षित शिक्षक होते हैं। संसाधन और बुनियादी ढाँचा सरकारी विद्यालयों में संसाधन और बुनियादी ढाँचा की कमी होती है, जबकि गैर-सरकारी विद्यालयों में इन सुविधाओं का स्तर उच्च होता है। पाठ्यक्रम



सरकारी विद्यालयों में एक ही पाठ्यक्रम का पालन होता है, जबकि निजी विद्यालयों में अलग-अलग पाठ्यक्रम और शिक्षा पद्धतियाँ हो सकती हैं। फीस और पहुंच सरकारी विद्यालयों में शिक्षा की लागत बहुत कम होती है, जबकि गैर-सरकारी विद्यालयों में यह अधिक होती है, जिससे अधिकतर निम्न और मध्यम वर्ग के परिवार सरकारी विद्यालयों का चयन करते हैं। सरकारी विद्यालयों की प्रमुख विशेषताएं हैं:

- निःशुल्क शिक्षा और पुस्तकें।
- विविधतापूर्ण सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थी।
- सीमित भौतिक और तकनीकी संसाधन।

उत्तर प्रदेश, भारत में सरकारी विद्यालयों की प्रमुख विशेषताएं उत्तर प्रदेश (UP) भारत का सबसे अधिक जनसंख्या वाला राज्य है, जिसमें शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है। राज्य के सरकारी विद्यालयों का लक्ष्य हर वर्ग के बच्चों को समान शिक्षा के अवसर प्रदान करना है। विभिन्न शिक्षा स्तरों, जैसे प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक, उत्तर प्रदेश में सरकारी विद्यालयों की विस्तृत और विविध संरचना है। इस लेख में हम उत्तर प्रदेश के सरकारी विद्यालयों की मुख्य विशेषताओं पर चर्चा करेंगे।

सरकारी विद्यालयों का संरचनात्मक ढांचा, उत्तर प्रदेश में सरकारी विद्यालयों का ढांचा व्यापक है, जिसमें विभिन्न स्तरों के विद्यालय शामिल हैं: प्राथमिक विद्यालय : ये विद्यालय आमतौर पर कक्षा 1 से कक्षा 5 तक होते हैं और बच्चों को बेसिक शिक्षा प्रदान करते हैं। प्राथमिक विद्यालयों का उद्देश्य बच्चों में बुनियादी शिक्षा के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक विकास भी करना है। माध्यमिक विद्यालय : ये विद्यालय कक्षा 6 से कक्षा 10 तक होते हैं। यहाँ बच्चों को शिक्षा के माध्यमिक स्तर पर ज्यादा विस्तृत और गहरे विषयों पर ध्यान दिया जाता है। इसके बाद, छात्र उच्च विद्यालय के स्तर पर प्रवेश करते हैं।

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय : ये विद्यालय कक्षा 11 और कक्षा 12 तक होते हैं, जिनमें छात्रों को विशेष विषयों के आधार पर विज्ञान, कला, या वाणिज्य के चुनाव का अवसर मिलता है।

सरकारी विद्यालयों की प्रमुख विशेषताएं, कम शुल्क संरचना: शिक्षा का खर्च उत्तर प्रदेश के सरकारी विद्यालयों में बहुत कम है। विद्यार्थियों को मिड-डे मील, स्कूल फीस, किताबें, कपड़े और अन्य सुविधाएँ सरकारी विद्यालयों में लगभग मुफ्त या बिल्कुल मुफ्त मिलती हैं। यह गुण कमजोर आर्थिक स्थिति वाले बच्चों के लिए महत्वपूर्ण है।

मिड-डे मील योजना: सरकारी स्कूलों में बच्चों को पोषण देने के लिए राज्य सरकार की मिड-डे मील योजना लागू की गई है। योजना का लक्ष्य बच्चों को पोषक तत्वों से भरपूर भोजन देना है, जिससे वे शारीरिक और मानसिक रूप से विकसित हो सकें। यह योजना विशेष रूप से ग्रामीण इलाकों में बच्चों की स्कूल जाने की दर को बढ़ाने में सहायक रही है।

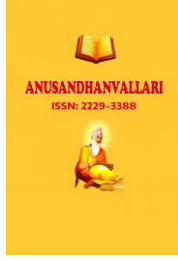
सरकारी योजनाओं का लाभ: उत्तर प्रदेश में सरकारी स्कूलों को कई योजनाओं का लाभ मिलता है। शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने के लिए समग्र शिक्षा अभियान, प्रधानमंत्री निःशुल्क शिक्षा योजना और शिक्षक प्रशिक्षण योजना लागू की गई हैं। इन योजनाओं से विद्यार्थियों को स्कूलों में प्रवेश, शिक्षक प्रशिक्षण और शैक्षिक सामग्री मिलती है।

शिक्षक की उपलब्धता और प्रशिक्षण: सरकारी स्कूलों में शिक्षक राज्य सरकार द्वारा नियुक्त किए जाते हैं और सरकारी नियमों के अनुसार प्रशिक्षित किए जाते हैं। राज्य में सुधार की कोशिशें की जा रही हैं, हालांकि शिक्षक की कमी और प्रशिक्षण की गुणवत्ता में बार-बार उतार-चढ़ाव देखा जाता है।

समावेशी और सुलभ शिक्षा: सरकारी विद्यालयों का मुख्य लक्ष्य समावेशी शिक्षा प्रदान करना है, जिसमें हर बच्चे को जाति, धर्म, लिंग, आर्थिक स्थिति के बावजूद समान शिक्षा का अवसर मिलता है। वंचित और गरीब बच्चों को शिक्षा का अवसर देने के लिए उत्तर प्रदेश में सरकारी विद्यालयों का नेटवर्क शहरी और ग्रामीण दोनों स्थानों में फैला हुआ है।

संसाधनों की कमी: सरकारी विद्यालयों में कई बुनियादी सुविधाओं की कमी है, हालांकि उनकी संरचना विस्तृत है। इनमें बुनियादी ढांचे की कमी, पानी की कमी, खराब शौचालय और आधुनिक शिक्षण उपकरण शामिल हैं। इसके बावजूद, राज्य सरकार इन समस्याओं को समय-समय पर हल करने की कोशिश करती है।

निश्कर्ष पाठ्यक्रम और परीक्षा प्रणाली: सरकारी विद्यालयों में शिक्षा का पाठ्यक्रम उत्तर प्रदेश बोर्ड (UP Board) द्वारा निर्धारित किया जाता है। यह पाठ्यक्रम बच्चों को बुनियादी ज्ञान, सामाजिक कौशल, गणित, विज्ञान, और मानविकी के विषयों में शिक्षा प्रदान करता है। इसके अलावा, बोर्ड द्वारा आयोजित की जाने वाली परीक्षाएँ विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर का मूल्यांकन करती हैं। समाजिक समरसता और विविधता: सरकारी विद्यालयों में विभिन्न समुदायों और जातियों के बच्चे एक साथ पढ़ते हैं, जिससे सामाजिक समरसता का निर्माण होता है। उत्तर प्रदेश जैसे सांस्कृतिक और जातीय रूप से विविध राज्य में यह एक बड़ी विशेषता है। विद्यालयों में विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चे एक साथ मिलकर सीखते हैं, जिससे आपसी समझ और सहयोग का वातावरण बनता है। आधुनिक प्रौद्योगिकी का उपयोग: सरकारी विद्यालयों में धीरे-धीरे प्रौद्योगिकी का उपयोग बढ़ रहा है। स्मार्ट क्लासरूम, कंप्यूटर प्रयोगशालाएँ, और इंटरनेट आधारित शिक्षा सुविधाएँ उपलब्ध कराने के प्रयास किए जा रहे हैं, हालांकि ये सुविधाएँ अभी भी सीमित हैं। शिक्षा में तकनीकी सहायता को बढ़ाने के लिए विभिन्न योजनाएँ लागू की जा रही हैं।



सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- 1 अग्रवाल, जे. सी. (2018). शिक्षा मनोविज्ञान के सिद्धांत और तकनीक. विकास पब्लिशिंग हाउस।
- 2 गुप्ता, एस. पी., एवं गुप्ता, अलका. (2020). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान. शारदा पुस्तक भवन।
- 3 द्विवेदी, आर. के. (2016). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की विद्यालयी संतुष्टि का उनके शैक्षिक वातावरण के संदर्भ में अध्ययन. भारतीय आधुनिक शिक्षा, 34 (2), 45–52.
- 4 पाठक, पी. डी. (2019). शिक्षा मनोविज्ञान. विनोद पुस्तक मन्दिर।
- 5 मिश्रा, करुणा. (2021). सरकारी और गैर-सरकारी विद्यालयों के छात्रों की सक्रियता एवं अकादमिक उपलब्धि एक तुलनात्मक अध्ययन. शिक्षा विमर्श, 12(1), 88–96.
- 6 शर्मा, आर. ए. (2017). शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार. आर. लाल बुक डिपो।
- 7 सिंह, ए. के. (2015). शिक्षा एवं मनोविज्ञान में अनुसंधान विधियाँ. मोतीलाल बनारसीदास।